1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 47, अंक 25
एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 6 मई, 2024
से रविवार 12 मई, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081
सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये
दूरभाष: 23360150
ई-मेल :
aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -
www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' की उदात्त परोपकारी भावनाओं के साथ

3 मई को सम्पूर्ण भारत सहित मॉरिशस, आस्ट्रेलिया, बंगलादेश एवं विश्व के लाखों परिवारों ने मनाया अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस

बंगलादेश की राजधानी ढाका में हुआ 50 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन

सैकड़ों की संख्या में उपस्थित यज्ञप्रेमी याज्ञिक युवक-युवतियों का कराया गया यज्ञोपवीत संस्कार

इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस 3 मई के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी आर्य समाज के प्रचार-प्रसार हेतु बंगलादेश में थे। उनके साथ अन्तर्राष्ट्रीय प्रचारक श्री आनन्द पुरुषार्थी जी भी प्रचार यात्रा पर थे। इस अवसर पर बंगलादेश के इतिहास में पहली बार 50 कुण्डीय यज्ञ का सुन्दर आयोजन आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी के ब्रह्मत्व में किया गया, जिसमें सैंकड़ो की संख्या में यज्ञप्रेमी युवक युवतियों ने यजमान के रूप में अत्यंत उमंग, उत्साह के साथ भाग लिया। और क्यों न हों यह उत्साह, क्योंकि आप सभी महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200 वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों के अंतर्गत यज्ञदिवस मना रहे थे। इस अवसर सभा महामंत्री जी ने उपस्थित महानुभावों को यज्ञ के वैज्ञानिक और आध्यात्मिक लाभ और महत्व के विषय में विस्तार से बताया। सभी आर्यजन अत्यंत प्रसन्न थे। बंगलादेश में इसके अतिरिक्त अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ, जिनकी जानकारी एवं रिपोर्ट आगामी अंकों में प्रकाशित की जाएगी।

- सम्बन्धित समाचार पृष्ठ 4 पर

आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास छात्रों के आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2024

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- पात्रता परीक्षा ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान और रिजनिंग पर आधारित होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 जुलाई 2024
ऑनलाइन परीक्षा तिथि 21 जुलाई 2024 11:00 AM IST

आवेदन करने के लिए वेबसाइट www.aryapragati.com

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172
E-mail: dss.pratibha@gmail.com

देववाणी-संस्कृत

अमरत्व की घोषणा

वेद-स्वाध्याय

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघींय आयुः प्रतरं दधानाः।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः।। -ऋ.10/18/2
ऋषिः **सङ्कुसुमो यामायनः**।। देवता-**मृत्युः**।। छन्दः **त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ- हे मनुष्यो! **यदा** = जब तुम **मृत्योः पदं योपयन्त :** = मृत्यु के पैर को ढकेलते हुए **एत** = चलोगे, तो **द्राघीय आयुः प्रतरंदधानाः** = तुम दीर्घ आयु को धारण करने वाले तथा **प्रजया धनेन आप्यायमानाः** = प्रजा और धन से परितृप्त होओगे। इसके लिए **शुद्धाः** = बाहर से **शुद्ध पूताः** = अन्दर से पवित्र और **यज्ञियासः** = यज्ञिय जीवन वाले **भवत** = हो जाओ।

विनय - संसार के प्रत्येक प्राणी पर मृत्यु ने पांव रखा हुआ है। जिस दिन उसकी इच्छा होती है उस दिन वह उस पांव को दबाकर प्राणी को कुचल डालती है, समाप्त कर देती है, पर, हे नरतनधारी मनुष्यो! तुममे वह शक्ति है जिससे कि तुम मृत्यु के उस पैर को धकेल कर अमर बन सकते हो। इस संसार में तुम मरे हुओं की तरह न रहकर, न सड़कर, अमर पुत्रों की तरह दृढ़ता से चलो; शुद्ध, पूत और यज्ञिय बन जाओ। ऐसे बनने से तुममें वह आत्मशक्ति जग जाएगी कि तुम उस मृत्यु के पैर को धकेल फेंकोगे। ठीक आहार, व्यायाम, तप आदि द्वारा शरीर को शुद्ध रखो और अन्दर सत्त्वशुद्धि, सौमनस्य आदि लाकर अन्तःकरण को पवित्र रखो; और फिर इस शरीर और मन से यज्ञिय कर्म ही करते जाओ; इससे तुम निःसन्देह अमर निकल आओगे। यह सच है कि यज्ञीय जीवन से मृत्यु मारी जाती है, तब मनुष्य की आयु सौ वर्ष तक चलने वाला यज्ञ हो जाता है, तब वह मनुष्य पूर्ण सौ वर्ष की दीर्घ= विस्तृत आयु को यज्ञरूप में धारण करता है। हम मरे हुए मनुष्य तो आयु को 'धारण' नहीं कर रहे हैं, किन्तु आयु के बोझ को जैसे-जैसे ढ़ो रहे हैं। जब शरीर को आत्मा धारे हुए होता है तो आत्मा शरीर को पूर्ण सौ वर्ष तक स्वस्थ चलने की-जीवन-यज्ञ को सौ वर्ष तक अखण्डित चलने की-आज्ञा देता है और इस जीवन में प्रजा को सृजने द्वारा तथा धन के बढ़ाने द्वारा अपनी विकास की इच्छा को परितृप्त करके यज्ञ को पूर्ण करता है। आत्मशक्ति का प्रकाश करने के लिए ही आत्मा शरीर को धारण करता है, अतः शरीर पाकर इस जगत् में कुछ-न-कुछ उपयोगी वस्तु का प्रजनन करना, सृजन (Create) करना तथा जगत् के सच्चे ऐश्वर्य को (धन को) बढ़ा जाना आवश्यक है। संसार में आई सब महान् आत्माएं इस संसार में कुछ-न-कुछ जगत्-हितकारी वस्तु का सृजन करके तथा जगत् में किसी उच्च- से-उच्च ऐश्वर्य को बढ़ाकर जाती हैं। हे मनुष्यों! उठो, मृत्युमय जीवन छोड़ो, शुद्ध, पूत तथा यज्ञिय बनो और मृत्यु के पैर को परे हटाकर अपने अमरत्व की घोषणा कर दो।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

साइबर क्राइम से बचे

ऑनलाइन डाकू लूट रहे हैं लोगों के मेहनत की कमाई

थोड़े समय पहले तक बस में ट्रेन में या भीड़ भाड़ वाली जगह पर अचानक पर्स चोरी हो जाता था। आम बोलचाल की भाषा में इसे जेब कटना कहा जाता था। लेकिन फिर आ गया एटीएम। इसमें पिन चोरी होने लगा। ठगी करने वालों के द्वारा मशीन में एक सीक्रेट डिवाइस इंस्टॉल करके इसके जरिये ही वह लोगों के साथ धोखाधड़ी को अंजाम दिया जाने लगा। फिर इसके बाद आ गई ऑनलाइन पेमेंट जिसे सबसे सुरक्षित समझा गया, किन्तु ठगों ने यहाँ भी स्कैम शुरू कर दिया, ऐसा स्कैम जिसे सुनकर इन्सान सोचता ही रह जाता है।

कहते हैं हर चीज का कोई एक अंत होता है, मगर फर्जीवाड़ा करने वालों के लिए शायद ऐसा कहना मुमकिन नहीं। एक का पता चलता है तो दूसरा आ जाता है। दूसरे पर लगाम लगाओ तो तीसरा आ जाता है। जब बटुआ चोरी होता था तो सिर्फ वो पैसे जाते थे, जो हम लेकर चलते थे। किन्तु अब पूरा बैंक अकाउंट ही साफ हो जाता है।

मानकर चलिए आपके पास किसी नम्बर से काल आई। कालर का नाम दिखाया ट्राई मतलब टेलिकॉम रेगुलेटरी ऑथोरिटी ऑफ इंडिया। आपने हेलो किया, उधर से आवाज आई रोबोट की। आपको कहा जायेगा आने वाले एक या दो घंटे में आपका नंबर ब्लॉक हो जाएगा। आगे की जानकारी के लिए 9 दबाएं। सिम्पल सी बात है कोई भी इन्सान एकदम से डर जायेगा। क्योंकि आज मोबाइल नम्बर सिर्फ एक नम्बर नहीं है बल्कि बैंक अकाउंट से लेकर आधार कार्ड, पेन कार्ड, व्हाट्सएप्प, फेसबुक, इन्स्टा, यानि सब कुछ एक नम्बर पर निर्भर होता है। तो इन्सान डर जाता है और जैसे ही नंबर 9 दबाया तो दूसरी तरफ से एकदम शालीनता के अंदाज में कोई आपसे बात करेगा। हिन्दी और अंग्रेजी सहित दूसरी भाषाओं में भी बात करने का इंतजाम किया गया है। बताया जाएगा कि पुलिस ने आपके नंबर को ब्लॉक करने के लिए ट्राई को बोला है क्योंकि आधार कार्ड से रजिस्टर नंबर से भद्दे विज्ञापन और अश्लील मैसेज भेजे जा रहे हैं।

अब जो आप बातों में आ गए और आपने पूछ लिया कि क्या करना होगा? तो इसके बाद एक पत्र लिखकर माफी मांगने और फिर वीडियो कॉल पर केवाईसी करने को कहा जाएगा। अगर आपने हामी भर दी तो फिर आपके कॉल को फर्जी पुलिस के पास फॉरवर्ड किया जाएगा। इसके बाद एक शख्स बाकायदा पुलिस की यूनिफॉर्म में आपसे बात करेगा। बीच-बीच में वाकी-टॉकी पर भी एक दो हड्कायेगा। एनकाउंटर की बात करेगा, एकदम टॉप क्वालिटी का प्रोडक्शन। इसके आगे कुछ जानने की जरूरत नहीं क्योंकि फिर डराकर येन-केन-प्रकारेण ब्लैकमेल किया जाएगा। आपके अकाउंट से आपके द्वारा ही अपने खाते में पैसे ट्रांसफर कराएगा।

आपने पिछले दिनों एक खबर भी सुनी होगी, फरीदाबाद की, जिसमें एक छात्रा को इसी तरह कूल पर उसके ही घर में 17 दिन तक डिजिटली अरेस्ट करके रखा था। इस दौरान आरोपियों ने उससे ढाइ लाख रुपये ऐंठ कर छोड़ा था।

जबकि गौर करने वाली बात ये है कि ट्राई ऐसा कोई कॉल नहीं करती है। नहीं मतलब नहीं। ट्राई या टेलिकॉम ऑपरेटर को आपसे संपर्क करने के लिए कॉल करने की क्या जरूरत? बस एक एसएमएस ही काफी है। दूसरा कस्टमर केयर कभी भी किसी कॉल को किसी बाहरी सोर्स को फॉरवर्ड नहीं करता।

लेकिन डर पैदा किया जाता है और उसका फायदा उठाया जाता है यानि जो डर गया वो मर गया। ध्यान रखिये दुनिया का कोई भी फ्रॉड दो तरीकों से होता है। एक डराकर, दूसरा लालच देकर। ये केवल जरुरी नहीं कि कॉल से ही संभव हो! जालसाजों ने इसके लिए दूसरे तरीके भी खोजे हैं। इसमें कोई फोन कॉल नहीं, कोई मेल नहीं, कोई एसएमएस भी नहीं। ऑर्डर कैंसिल होने वाला ओटीपी भी नहीं। पुलिस

..... ठगी किसी भी तरह की जा सकती है और इससे बचने का एक तरीका है वो है ना डरें, ना लालच में आयें। कभी कोई अनजान व्यक्ति डराए तो अपने परिवार, दोस्तों से सम्पर्क जरुर करें। पुलिस की सहायता ली जा सकती है। इसके अलावा किसी भी लालच में आने से पहले एक बार जरुर सोचें कि कोई अनजान व्यक्ति जिसका आपने चेहरा भी नहीं देखा वो आपको फ्री में कुछ भी क्यों दे रहा है?.....

और सीबीआई के नाम पर दी जाने वाली धमकी भी नहीं। बस आपके घर या ऑफिस में आएगा एक लिफाफा। कोई दरवाजे के पास फेंक कर नहीं जाएगा बल्कि बाकायदा किसी बड़ी कूरियर कंपनी की सर्विस इस्तेमाल होगी। एकदम देसी तरीका निकाला कागज-पत्री का इस्तेमाल और अकाउंट खाली। इसमें होता क्या है जब आप लिफाफा खोलेंगे तो किसी ऑनलाइन प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी के नाम पर एक अचीवमेंट सर्टिफिकेट निकलेगा। कलरफुल फॉर्म, जिसमें आपको अपने डिटेल भरने के लिए कहा जाएगा। वजह, क्योंकि आपने जीती है एक कार या स्कूटी कोई या बहुत बड़ा इनाम। यहां तक आपको लगेगा इसमें हर्ज क्या है, भरकर भेज देते हैं। लेकिन अभी असल खेल अभी बाकी है। सारी जानकारी भरने के बाद एक फॉर्म में दिए गए कोड को स्क्रैच करने के लिए कहा जाएगा। स्क्रैच करते ही सामने नजर आएगा एक क्यूआर कोड जिसे स्कैन करना है। मतलब ये प्रोसेस है, ठगी जैसे ही क्यूआर कोड स्कैन और अकाउंट से पैसा खत्म।

जैसे-जैसे साइबर फ्रॉड को लेकर लोगों में जागरूकता बढ़ रही है, वैसे-वैसे साइबर क्रिमिनल्स भी जालसाजी के तरीकों में बदलाव कर रहे हैं। आए दिन ठगी के नए तरीकों से लोगों की मेहनत की कमाई पर चपत लग रही है। बदमाश ठगी के लिए नए-नए तरीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं। बात चाहे सोशल मीडिया की हो या शॉपिंग की, आपको हर तरफ ठग मिल जाएंगे। इनका तरीका ऐसा होता है कि आम आदमी आसानी से ठगों के झांसे में आ जाते हैं। ठगी का एक और तरीका आजकल खूब चल रहा है। इसमें ठग लोगों की डिटेल चुराकर किसी ऑनलाइन कंपनी का डिलिवरी बॉय बनकर कॉल करते हैं। वह कहते हैं कि आपने ऑनलाइन कुछ सामान ऑर्डर किया था, मैं पैकेट लेकर आपके घर के बाहर खड़ा हूं, वह ऑर्डर को कैश ऑन डिलिवरी वाला बताता है। क्योंकि उस व्यक्ति ने ऑर्डर नहीं किया होता ऐसे में वह इसे लेने से मना करता है। इस पर ठग कहते हैं कि ऑर्डर कैंसल करना होगा। इस प्रोसेस के दौरान एक ओटीपी आने की बात कही जाती है। ओटीपी बताते ही खाते से

- जारी पृष्ठ 7 पर

महर्षि की 200वीं जयन्ती पर आर्यसमाज द्वारा राष्ट्रहित में उठाए गए मुद्दों की श्रृंखला में 2

देश, धर्म, संस्कृति और संस्कारों को लेकर उत्पन्न हुई चुनौतियों का चिन्तन

रिश्ते बचाइए-देश बचाइए

रिश्ते भविष्य में आने वाली एक ऐसी समस्या है कि शायद कोई अभी आसानी से न समझे। प्यार से समझना और समझाना होगा, चर्चा आज से ही शुरू करें कहीं परिणाम आने में देर न हो जाये। जागृति फैलाएं, आपस में चर्चा का नियम बनाएं, अगर कोई इसके विपरीत विचार भी दे तो उन्हें धैर्य के साथ सुनें, भविष्य में आने वाली समस्या से अवगत कराएं। 'रिश्ते बचाओ-देश बचाओ' मुहिम को सोशल मीडिया पर अपने तरीकों से प्रसारित भी कर सकते हैं, सोचिये घर में बच्चे होंगे तो आपका परिवार मजबूत बनेगा, परिवार मजबूत बनेगा तो समाज मजबूत होगा, समाज मजबूत होगा तो ही आपका राष्ट्र मजबूत होगा।

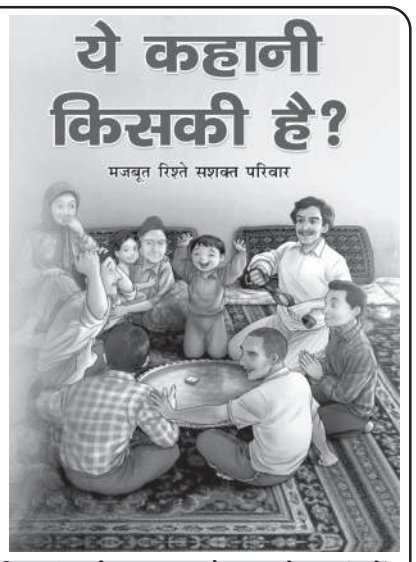

सत्य घटनाओं पर आधारित सॅम्पूर्ण पुस्तक स्कैन करके स्वयं पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ाएं : पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें : www.vedicprakashan.com

रिश्ते- एक ऐसा शब्द है जिसे सुनते ही मजबूत और संगठित सम्बन्धों की एक ऐसी खुशबु-सी आने लगती है, जिससे एक सहज सुरक्षा का अहसास होने लगता है। लगता है कि हम सुरक्षित हैं, लगता है हम मजबूत हैं, लेकिन 20वीं शताब्दी में पश्चिम जगत् के रहन-सहन और समाज दर्शन का जो गहरा प्रभाव भारत पर पड़ा, उसका परिणाम आज हमारे सम्मुख आकर खड़ा होता दिखाई दे रहा है। परिवार सिकुड़ रहे हैं अकेलापन बढ़ता चला जा रहा है, वो रिश्ते समाप्त हो रहे हैं जो कभी मजबूती का अहसास दिलाते थे और साथ ही हमारे सामाजिक व्यवहार तथा सांस्कृतिक उत्सव भी इसे पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव कहें या एक षड्यंत्र। आज योजनाबद्ध तरीके से परिवार और रिश्ते नष्ट हो रहे हैं। आगे चलकर राष्ट्र का भवि य क्या होगा आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं।

ऐसे में अहम् प्रश्न बन जाते हैं, क्यों जरूरी है रिश्ते बचाना ? रिश्ते बचाने से क्या होगा और इससे संस्कृति और राष्ट्र का क्या भला होगा ? साथ ही एक प्रश्न ये भी कि, हमारा इसमें योगदान क्या हो सकता है। जरा कुछ पल सोचकर देखिये कि आज से कुछ समय बाद आप तो होंगे, आपके आस-पास भीड़ भी होगी लेकिन इस भीड़ में अपनेपन और स्नेहभाव का कोई एक स्पर्श नहीं होगा। यानि आपको कोई अपना कहने वाला नहीं होगा। अब कोई कहे, ऐसा कुछ नहीं होगा- ये तो सिर्फ एक खोखला भय है, तो उन्हें आज चीन के बुजुर्गों से यह सब सीख लेना चाहिए। असल में चीन ने 1979 से एक विशेष जनसंख्या नीति को लागू किये रक्खा, जिससे उनकी महिलाओं में एक तरह की नकारात्मक भावना ने जन्म लिया और महिलाओं की प्रजनन शक्ति दर तेजी से गिरती चली गयी। इसी कारण आज चीन में इस एक बच्चे की नीति से आज वहां बुजुर्ग अकेले और बेसहारा दिखाई देते हैं। उनके पास अनुभव भी है और पैसा भी लेकिन रिश्तों-नातों से खोखले होकर नितांत अंधेरे में हैं।

दूसरा थोड़े समय पहले जापान की एक जनसंख्या रिपोर्ट थी जिसके अनुसार जापान में खाली घरों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। एक आंकलन के अनुसार, जापान में एक करोड़ से ज्यादा घर खाली है। ऐसे कई घरों के मालिक अपनी सम्पत्ति फ्री में भी देने की तैयार हैं। रिपोर्ट के अनुसार अनुमान है कि 2050 तक जापान की आबादी में करीब 36 फीसदी और साल 2060 तक 40 फीसदी बूढ़े लोग शामिल होंगे।

इसी कड़ी में अगस्त, 2022 की रिपोर्ट है कि रूस जैसे देश भी अपने देश की जनसंख्या बढ़ाना चाहते हैं। देश की सभी महिलाओं को टास्क दिया है कि वे देश के लिए अधिक से अधिक संतान पैदा करें। इसके लिए इनाम देने की घोषणा भी की गई है। सोचिये आखिर ऐसी क्या बात हो गई है, जो रूस को इस तरह के ऐलान के लिए विवश होना पड़ा।

चीन हो या जापान या फिर रूस अपने नागरिकों के भविष्य के लिए, एक योजना बना रहे हैं, जिसके तहत लोग अपनी इच्छा अनुसार अपना परिवार बढ़ा सकते हैं और इसके लिए को सीमित संख्या तय नहीं की जाएगी। इन देशों के इस हाल को देखते हुए अगले कुछ वर्षों में भारतीय समाज में भी यही हाल होने जा रहा है, क्योंकि अभी तक भारतीय समाज की पहचान और प्राणवायु रहे संयुक्त परिवार, तेजी से सिमट रहे हैं और धीरे-धीरे लुप्त हो जायेंगे। देश के बड़े शहरों में परिवार और समाज विघटन की कगार पर पहुँच चुका है। 80-90 के दशक में ट्रकों आदि के पीछे लिखे गये स्लोगन 'छोटा परिवार सुखी परिवार' आज दु:खी परिवार नजर आ रहा है। देश में बढ़ते वृद्ध आश्रम इस बात का प्रमाण हैं। जैसे-माता-पिता हमारी जिम्मेदारी नहीं बल्कि एक बोझ बनते जा रहे हैं।

रिश्ते किसी भी समाज की नींव हैं जिन पर पूरे समाज का ताना-बाना खड़ा है। सामूहिक परिवारों की श्रृंखला वाला देश एकल परिवारों की ओर बढ़ता गया। जिनका परिणाम ये हुआ कि अब घर में बुजुर्ग तो हैं पर उनकी देखभाल वाला कोई नहीं है।

इसका सबसे बड़ा कारण है एक ही बच्चा पैदा करने की परम्परा, जो आज बुजुर्ग को घर से घसीटकर बाहर वृद्ध आश्रम जैसी जगहों पर ले गई । आज हर कोई एक बच्चे को ही अपने जीवन में पर्याप्त समझता है। जो नहीं समझता, उन्हें समझाया जा रहा है और इससे भी आगे बढ़कर 'चाइल्ड फ्री इंडिया', 'नो चाइल्ड' जैसी कैम्पेन चलाकर, इसके अलावा 'पेट पुराण' जैसी वेबसीरिज आदि बनाकर सोशल मीडिया के माध्यम से परिवारों को यह समझाया जा रहा है कि परिवारों में बच्चे की कोई अवश्यकता नहीं, पालना है तो उनकी जगह कुत्ते-बिल्ली आदि को पालो। डिंक-DINK (डबल इंकम नो चाइल्ड/किड्स) जैसी प्रवृतियों को लाया जा रहा है।

ऐसे में प्रश्न बन जाता है कि ये 'चाइल्ड फ्री इंडिया' 'नो चाइल्ड' और 'डिंक' जैसी कैम्पेन, 'पेट पुराण' जैसी वेबसीरीज आखिर क्यों और किसके इशारे पर बनाई जा रही है? आखिर कौन गुप्त हैं जो समृद्ध भारतीय परिवार जैसी संगठित परम्परा को समाप्त करने कैम्पेन चला हैं? असल में परिवार से समाज बनता है और समाज से राष्ट्र। किन्तु जब परिवार ही नहीं होंगे तो राष्ट्र का अस्तित्व कहाँ से बचेगा? दूसरा, परिवार से रिश्ते बनते हैं रिश्तों से संस्कृति का उदय होता है या कहिये रिश्ते ही संस्कृति उत्सवों को आगे बढ़ाते हैं तथा धर्म तथा सभ्यता की मजबूती से सहारा देते हैं।

आज भले ही को दो बच्चों से अपने परिवार को पूरा करना सही समझता है। तो को एक बच्चे से। अधिकांश जगह आजकल दोनों पति-पत्नी कामकाजी होते हैं, इसलिए वो एक ही संतान ठीक समझते हैं तथा दूसरों को भी इसकी सलाह देते हैं। किन्तु सलाह के बाद सवाल ये है कि एक ही बच्चे की नीति से कैसे रिश्तों का विखंडन होता है, ये भी समझिये। मान लिया परिवार में एक ही संतान है लेकिन आगे चलकर उस बच्चे के कितने रिश्ते अपने आप समाप्त हो जायेंगे। सोचिये न मामा होगा, न चाचा, ताऊ, ताई, बुआ, बहन, और न उसका भाई , ये सब रिश्ते समाप्त हो जायेंगे। इसके बाद जब वो अकेला बड़ा होगा तो उसके लिए माँ-बाप भी मायने नहीं रख पाएंगे। यानि जो रिश्ते कभी हमारे परिवारों को मजबूत करते थे वो रिश्ते अब कहीं है ही नहीं!

एक और महत्त्वपूर्ण परिस्थति पर विचार करें। एक उदाहरण देखें किसी के यहाँ बेटा हुआ तथा अन्य किसी दूसरे के यहाँ बेटी हुई । दोनों को अच्छी शिक्षा भी दे दी गयी, वो भी कामकाजी हो गये। अब दोनों की शादी हो गयी। उनके यहाँ भी एक बच्चा हो गया, क्या आपको नहीं लगता आगे चलकर उक्त दम्पति के ऊपर लड़की के दो माता-पिता और लड़के के दो माता-पिता मिलाकर कुल चार बुजुर्गों और एक बच्चे की देखभाल की जिम्मेदारी हो गयी? क्या वह इन रिश्तों की जिम्मेदारी ईमानदारी और स्नेह के साथ निभा पाएंगे? दिल पर हाथ रखकर कितने लोग जवाब दे सकते हैं कि उस समय उन चार बुजुर्गों की जगह घर में होगी या बाहर किसी वृद्धाश्रम जैसी संस्था में? प्रश्न यह भी है कि चार बुजुर्ग रोगी होंगे तो उनके खर्च भी होंगे और वो समय भी चाहेंगे उस अवस्था में दम्पति खुद के लिए समय निकालेंगे या अपनी इकलौती संतान के लिए या फिर उन चार बुजुर्गों के लिए? अंत में वृद्धाश्रम जैसी संस्था भी एक बिजनेस बन जायेगा यानि कमाई का साधन हो जायेगा।

केवल इतना भर नहीं जब एक बच्चा होगा, चाहें लड़का हो या लड़की। उनके लिए रक्षाबंधन, भैयादूज जैसे उत्सव जो हमें जिम्मेदार बनाते हैं। वे भी स्वत: ही समाप्त हो जायेंगे। हो सकता है कुछ लोग इस पारिवारिक सामाजिक, समीकरण से इत्तेफाक न रखें। और कहें कि महंगा बहुत है एक बच्चे की परवरिश ही बड़ी मुश्किल होती है। यदि आप ऐसे सोचते हैं और अपने इस जवाब पर कायम हैं और एक बच्चे की परवरिश को बड़ी बात समझ रहे हैं तो आखिर वो एक बच्चा, चार बुजुर्गों की जिम्मेदारी कैसे उठाएगा? यानि आप दो बच्चों का पालन-पोषण नहीं कर सकते तो उस अकेले बच्चे से वृद्ध अवस्था में चार वृद्ध और एक बालक कुल पांच के पोषण का सपना किस आधार पर देख सकते हैं?

महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि जब अकेला बच्चा घर में किसी हम उम्र को नहीं रख पाता तो वो उसकी खोज अन्यत्र करने की कोशिश करता है या फिर अकेला जीवन जीने की आदत डाल लेता है। कहीं न कहीं दोनों परिस्तिथियां हानिकारक हैं हालाँकि कुछ लोग कह सकते हैं कि हम बच्चे को अच्छे संस्कार देंगे वो ऐसा नहीं करेगा। किन्तु यहाँ भी एक सामाजिक संविधान को ओर इंगित होकर देखा जाये तो संस्कार संस्कृति से बनते हैं संस्कृति: समाज से और समाज परिवार पर निर्भर होते हैं। किन्तु जब परिवार ही नहीं होंगे, उनके उत्सव और परम्परा ही नहीं होगी तो संस्कार को बात बेमानी हो जाएगी। - *शेष पृष्ठ 7 पर*

यज्ञ दिवस के अवसर पर आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य परिवारों, शिक्षण संस्थाओं और आर्य प्रतिष्ठानों में पर्यावरण शुद्धि एवं विश्व कल्याण की भावना को लेकर 3 मई को दी गई आहुतियां

आर्य समाज एक यज्ञमय परोपकारी एवं आंदोलनकारी विश्व स्तरीय संगठन है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने आर्य समाज की नियमावली में जहां वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने का निर्देश किया है, वही पंचमहायज्ञ विधि के अनुसार पर्यावरण शुद्धि एवं विश्व कल्याण के लिए नियमित अग्निहोत्र करने की विधि भी हमें दी। अत: 3 मई 2020 को जब भारत सहित संपूर्ण विश्व में कोरोना जैसी महामारी लोगों को असमय मृत्यु के आगोश में सुला रही थी, सभी मठ, मंदिर और सार्वजनिक स्थल बंद पड़े थे, सभी पूजा, पाठ, संकीर्तन, सत्संग बैन थे, लगभग सभी देशों में लॉक डाउन से लोग घरों में कैद होने पर मजबूर थे, तब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर संपूर्ण आर्य जगत ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक साथ, एक समय **''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया''** की भावना से यज्ञ का दिव्य आयोजन किया था। तब से लेकर हर वर्ष 3 मई को आर्य समाज का विश्व व्यापी संगठन देश के कोने-कोने में और विदेशों में एक साथ लाखों की संख्या में यज्ञों का आयोजन उत्साह पूर्वक करता आया है।

इस क्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुसार 3 मई 2024 को प्रात: काल 9:00 बजे यज्ञ करने के निर्देश को स्वीकार करते हुए भारत के कोने कोने में और विदेशों में लाखों की संख्या में आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य परिवारों और आर्य प्रतिष्ठानों सहित सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं में यज्ञों का आयोजन संपन्न हुए। इस अवसर पर आर्य समाज के सभी अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों ने प्रमुखता से यज्ञ किए। सबसे बड़ी बात यह रही कि गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, आर्य अनाथालय और अन्य शिक्षण संस्थाओं के बच्चों ने भी किए। इससे भी ज्यादा प्रसन्नता की बात यह है कि जिन बच्चों को आर्य वीर दल, वीरांगना दल के माध्यम से शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक स्तर सुदृढ़ बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है और साथ में यज्ञादि कर्म की प्रेरणा भी प्रदान की जाती है, ऐसे सैंकड़ों बच्चों ने स्कूल जाने से पूर्व अधिकांश रूप से अकेले यज्ञ किया। इसके लिए आर्य वीर दल और आर्य वीरांगना दल के सभी शिक्षकों और आर्य वीरों बहुत बहुत बधाई। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ की पूरी टीम ने दिल्ली और एन सी आर में विभिन्न स्थानों पर सेवा बस्तियों में यज्ञ किए और निरंतर यज्ञ करने का संदेश भी दिया।

बनारस (उत्तर प्रदेश)

सूरजमल विहार (दिल्ली)

जनकपुरी बी ब्लाक (दिल्ली)

भिनाय कोठी, अजमेर (राजस्थान)

जहांगीरपुरी (दिल्ली)

गढ़ रोड, हापुड (उत्तर प्रदेश)

भद्रकाली मन्दिर, हापुड़ (उत्तर प्रदेश)

सूरजमल विहार (दिल्ली)

सूरजमल विहार (दिल्ली)

सभा मन्त्री श्री सुखबीर सिंह आर्य जी के घर में यज्ञ

आर्यसमाज कीर्ति नगर में यज्ञ

यज्ञ करते श्री पतराम त्यागी जी

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर आर्य जगत् के त्यागी, बलिदानी और समर्पित महापुरुषों की गाथा

पुण्य स्मृति दिवस
8 मई पर विशेष

महान देश भक्त भाई बाल मुकुन्द

जिसने एक ही बम से हिला डाला था तत्कालीन अंग्रेजी सत्ता को

चचेरे भाई – भाई परमानंद आजादी के आन्दोलन में खुद को आहूत कर चुके थे। भाई बालमुकुन्द पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ चुका था। इस प्रभाव को गाढ़ा होने का मौका तब मिला, जब भाई बालमुकुंद की भेंट आर्य समाज के तीन सिपाही मास्टर अमीरचंद, लाला हरदयाल और रासबिहारी बोस से हुई और वह क्रांतिकारी बन गये। उस दौरान भाई बालमुकुन्द को नौकरी मिल गई थी किन्तु आजादी की धुन पर सवार हुए तो नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। तब उनके बड़े भाई जयरामदास को चिन्ता हुई और उन्होंने बालमुकुंद विवाह एक सुन्दर सुशील कन्या रामरखी से करवा दिया। विवाह हो जाने पर भाई बालमुकुंद का मन क्रांति से नहीं फिरा, बल्कि अवधबिहारी और भाई बालमुकुंद ने क्रांतिकारी साहित्य डट कर तैयार किया और सब जगह बांटने लगे, साथ ही वह बम बनाने की भी शिक्षा लेने लगे।

23 दिसम्बर साल 1912; दिल्ली को देश की राजधानी बने बमुश्किल एक साल पूरा हुआ था। वायसराय लॉर्ड हार्डिंग दिल्ली आये थे। उस दिन उनकी सवारी चांदनी चौक में शीशगंज गुरुद्वारा से कुछ दूरी तक धुलिया वाले कटरा के पास से गुजर रही थी कि इसी दौरान दो बम फटे। जुलुस में अफरा-तफरी मची। चारों और भगदड़ का माहौल था। यह पता नहीं लग सका कि बम किसने फेंके हैं!! क्या हुआ था वायसराय लॉर्ड हार्डिंग का और क्या उनकी मौत से इंग्लेंड के राजा जॉर्ज पंचम को को सन्देश देना था?

थोड़ी देर इस घटना को यहीं विराम देते हुए चलते उस दौर के हिन्दुस्तान जब पाकिस्तान नहीं बना था। साल था 1889 जेहलम जिले के करियाला गाँव में भाई मथुरादास के यहाँ बेटे का जन्म हुआ था। नाम रखा भाई बालमुकुंद। जिस कुल में भाई बालमुकुंद पैदा हुए वहां अपने सिद्धांतों पर मर मिटने की प्रथा बड़ी पुरानी थी। इसी कुल में भाई मतिदास हुए, जो गुरु तेग़ बहादुर जी के साथ शहीद हुए थे, उन्हें लकड़ी के दो शहतीरों के के बीच रखकर आरी से चीरा गया था। इस बलिदान के कारण गुरु गोविन्दसिंह ने इस कुल के लोगों को भाई की उपाधि दी थी। इसी त्याग-तपस्या से उज्ज्वल कुल में भाई बालमुकुंद का जन्म हुआ था।

किस्सा केवल इतना भर नहीं है बालमुकन्द के एक चचेरे भाई भी थे भाई परमानंद, भाई बालमुकुंद से 14 साल बड़े जो गदर आंदोलन के संस्थापक सदस्य थे। यानि बालमुकुन्द का जन्म ही एक क्रन्तिकारी परिवार में हुआ था। भाई परमानंद और वह, दोनों गाँव के अन्य बालकों से भिन्न थे। पढ़ने में रूचि थी तो खेलकूद में भी सबसे आगे थे। गाँव के पास एक नाला था, वर्षा के दिनों में यह नाला एक नदी का रूप धारण कर लेता था और उसको पार करना कुशल तैराक का ही काम होता था। उसी नाले के किनारे तपसीराम नाम के साधु रहते थे, जो आम साधुओं से भिन्न थे। यूँ तो तपसीराम भी अच्छे ज़मींदार घराने के थे, किन्तु वह उसी नाले के किनारे पर गुफा में रहते थे। स्वामी दयानंद सरस्वती जी से प्रभावित साधू गाँव में जब कभी कोई झगड़ा होता, वह फौरन वहाँ पहुंचते और न्यायपक्ष में बोलते। इससे वह 'महाराज' नाम से मशहूर हो गये थे। महाराज अंग्रेज़ी राज्य के विरुद्ध थे। उन्होंने एक अखाड़ा खोल रखा था, जहाँ शारीरिक क्षमता बढ़ाने के लिए व्यायाम और खेलकूदों का बाकायदा अभ्यास चलता था।

अंग्रेजी राज के विरुद्ध भावना मन में थी ही। थोड़े बड़े हुए तो लाहौर के डी.ए.वी. कॉलेज में पढने चले गये। आर्य समाज के आजादी के आन्दोलन से प्रभावित वहां बड़ी संख्या में छात्र पहले से ही मोजूद थे। भाई बालमुकुंद भी इसी लाहौर के डी.ए.वी. कॉलेज में पढ़कर स्नातक हुए और फिर उन्होंने शिक्षक बनने के उद्देश्य से बी.टी.सी. की परीक्षा भी पास कर ली। 1910 के बी.टी.सी. उत्तीर्ण परीक्षार्थियों में उनका नंबर तीसरा था। भाई परमानंद आजादी के आन्दोलन में खुद को आहूत कर चुके थे। भाई बालमुकुन्द पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ चुका था। इस प्रभाव को गाढ़ा होने का मौका तब मिला, जब भा बालमुकुंद की भेंट आर्य समाज के तीन सिपाही मास्टर अमीरचंद, लाला हरदयाल और रासबिहारी बोस से हुई और वह क्रांतिकारी बन गये। उस दौरान भाई बालमुकुन्द को नौकरी मिल गई थी किन्तु आजादी की धुन पर सवार हुए तो नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। तब उनके बड़े भाई जयरामदास को चिन्ता हुई और उन्होंने बालमुकुंद का विवाह एक सुन्दर सुशील कन्या रामरखी से करवा दिया। विवाह हो जाने पर भाई बालमुकुंद का मन क्रांति से नहीं फिरा, बल्कि अवधबिहारी और भाई बालमुकुंद ने क्रांतिकारी साहित्य डट कर तैयार किया और सब जगह बांटने लगे, साथ ही वह बम बनाने की भी शिक्षा लेने लगे। आजादी की लड़ाई में जुटे होने के कारण वे कुछ समय ही पत्नी के साथ रह सके।

ये वो दौर था जब महाराजा जॉर्ज पंचम व महारानी मैरी भारत की यात्रा पर थे। उनके तिलक हेतु दिल्ली में दरबार सजा था। उन दोनों को भारत के सम्राट व महारानी घोषित किया जा रहा था। दिल्ली दरबार के बाद वायसराय लॉर्ड हार्डिंग की दिल्ली में सवारी निकाली जा रही थी। इस शोभायात्रा की सुरक्षा में अंग्रेज़ों ने कोई भी कसर नहीं छोड़ी थी। सादे कपड़ों में सीआईडी के कई आदमी यात्रा से हफ्तों पहले ही पूरी दिल्ली में फ़ैल गए थे। यात्रा वाले दिन भी सुरक्षा इंतज़ाम सख्त थे। दो सुपरिटेंडेंट, दो डिप्टी-सुपरिटेंडेंट, पांच सार्जेंट, 75 हेड कांस्टेबल और 35 माउंटेड कांस्टेबल सुरक्षा पंक्ति में लगे थे। इनके अतिरिक्त इलेवेंथ लैंसर्स

– शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर
दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्त्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

न्यूयार्क (अमेरिका): 18 से 21 जुलाई, 2024

सम्माननीय भाईयो-बहिनो! जैसा कि आप जानते ही हैं कि सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए वर्तमान समय अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास से भरा हुआ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में देश विदेश में भव्य और विराट आयोजन सफलतापूर्वक निरन्तर हो रहे हैं। इस क्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन न्यूयॉर्क में किया जा रहा है। इस अवसर पर समस्त आर्यजनों से हमारा अनुरोध है कि -

1 **विदेशों में रहने वाले महानुभाव**
भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में रहने वाले समस्त आर्य महानुभाव अमेरिका सम्मेलन में भाग लेने हेतु सपरिवार पधारें।

2 **अमेरिका में रहने वालों को दें निमन्त्रण**
आर्यजन स्वयं सपरिवार पहुँचे तथा अमेरिका में रहने वाले पारिवारिक जनों और मित्रों को निमंत्रण देकर आने का अनुरोध अवश्य करें

3 **सभा की ओर से आमन्त्रण भेजें**
सभा की ओर से आमन्त्रण भिजवाने के लिए विदेश प्रवासी आर्यजनों के नाम, पता एवं सम्पर्क सूत्र 9650183339 पर व्हाट्सएप करें

ऐतिहासिकता के बनें साक्षी

न्यूयार्क में आर्यों का मेला लगेगा, महर्षि दयानन्द का गुणगान किया जाएगा, यह कार्यक्रम अत्यन्त प्रेरक और ऐतिहासिक होगा, जिसके हम सब साक्षी बनेंगे। भारत से महासम्मेलन में सम्मिलित होने वाले समस्त महानुभावों के लिए पंजीकरण कराना अनिवार्य है। आप भी अपना पंजीकरण शीघ्र कराएं।

अमेरिका महासम्मेलन, पंजीकरण, टूर पैकेजे/कार्यक्रम और वीजा आदि की जानकारी/सहयोग प्राप्त करने के लिए श्री सन्दीप आर्य जी 91-9650183339 को व्हाट्सएप्प करें। विदेश में रहने वाले अपने परिजनों का नाम, पता और सम्पर्क सूत्र भी इसी मोबाईल नं. पर नोट कराएं/व्हाट्एप्प करें।

अमेरिका यात्रा एवं टूर पैकेज की जानकारी के लिए दिया गया कोड स्कैन करें।

साप्ताहिक स्वाध्याय

गढ़ से टक्कर

गतांक से आगे -

जो जनता माधो बाग की ओर उमड़ने लगी, उसमें निन्यानवे फीसदी मूर्ति-पूजा के माननेवाले थे। वे लोग सत्यासत्य-निर्णय देखने नहीं जा रहे थे, बल्कि माने हुए सनातन धर्म को जिताने जा रहे थे। उन्हें बतलाया गया था कि बनारस में एक बड़ा भारी नास्तिक आया है, जो विश्वनाथपुरी में ही विश्वनाथ जी को गालियां देता है। उसका दमन करना हिन्दूमात्र का कर्त्तव्य है। लोग अपनी-अपनी भावना के अनुसार एक बड़े नास्तिक की पराजय देखने जा रहे थे। जाने वालों में भले भी थे, और बुरे भी थे। भले आदमी अपने पण्डितों को आशीर्वाद देते जा रहे थे, और बुरे आदमी नास्तिक पर ईंट-पत्थर बरसाने के मन्सूबे बांध रहे थे। सभा मण्डप का प्रबन्ध शहर के कोतवाल रघुनाथ प्रसाद के आधीन था। वह बड़े सज्जन थे। शान्ति से शास्त्रार्थ का कार्य चलाने के लिए उन्होंने बैठने की ऐसी व्यवस्था की थी कि महर्षि जी के साथ एक समय में एक ही पण्डित बोल सके, और पण्डित लोग उन्हें घेरकर न बैठ सकें। तीन ऊंचे आसन जमाए गए थे-एक महर्षि जी के लिए, दूसरा प्रतिपक्षी पण्डित के लिए और तीसरा काशी नरेश के लिए। विरोधियों की इतनी संख्या! और उनमें भी काशी के प्रसिद्ध गुण्डों की काफी संख्या महर्षि जी के भक्तों के हृदय कांपने लगे। एक भक्त ने महर्षि जी से भय की चर्चा की। महर्षि जी ने अपने स्वभाव के अनुसार ईश्वर-विश्वास और निर्भयता का उपदेश देकर सांत्वना देते हुए कहा, एक परमात्मा है और एक ही धर्म है। दूसरा कौन है, जिससे डरें? उन सबको आ जाने दो। जो कुछ होगा उसी समय देख जाएगा। महर्षि जी के भक्त पण्डित जवाहरदास जी ने जैसा कुछ सन्देह प्रकट किया, वैसा ही उत्तर पाया। निर्भय, निष्कम्प, नि:शंक संन्यासी उमड़ते हुए विरोधी मेघ के कर के प्रहार को सहने के लिए तैयार होकर बैठा था और थोथी गरज पर मुस्करा रहा था। जो बहादुर, केसरी को उसकी मांद में जाकर ललकार सकता है, वह उसकी गर्जना को भी अक्षुब्ध चित्त से सुन सकता है।

पौराणिकों की अक्षौहिणी सेना आ पहुंची। रोब जमाने को काशी नरेश, बाल की खाल उधेड़ने को वृद्ध स्वामी विशुद्धानन्द, प्रसिद्ध बालशास्त्री और अन्य माधवाचार्य, वामनाचार्य, ताराचरण आदि विख्यात पंडित तथा हल्ला मचाने को काशी के विद्यार्थी और गुण्डे इस प्रकार झूमती-झामती और बेतहाशा जय-जयकारों से आकाश को गुंजाती हुई अंग-त्रय-सम्पन्न पौराणिक सेना माधो बाग में पहुंच गई। नियमहीन सेना के पहुंचते ही मण्डप का नियम टूट गया। कोतवाल का यत्न व्यर्थ हुआ। महर्षि जी को पण्डितों ने चारों ओर से घेर लिया। उनके पास किसी हितैषी को बैठने का अवसर न दिया गया। रास्ते रोक लिये गए, और अकेले दयानन्द को घेरकर पचास हजार विरोधी सनातन धर्म का जयकारा बोलने लगे।

शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। कहने को शास्त्रार्थ था, परन्तु वस्तुत: वर्षाऋतु के बढ़े हुए बीसियों प्रचण्ड नालों की चट्टान से टक्कर थी। हरेक पण्डित अपनी बल परीक्षा कर रहा था और चाहता था कि किसी प्रकार स्वामी जी निरुत्तर हो जाएं, परन्तु प्रत्युत्पन्नमति संन्यासी काबू नहीं आता था। बरसों अभ्यास और ब्रह्मचर्य पालन से संग्रह किये हुए निर्भयता, धैर्य और स्मृति आदि गुण इस समय उनके परम सहायक हुए। प्रश्नरूपी तीरों की अनवरत बौछार हो रही थी। साधन-सम्पन्न ब्रह्मचारी फेंके हुए तीरों को मार्ग में ही काटता जाता था और साथ ही अपने धनुष की करामात दिखा रहा था। उस लक्ष्यवेधी धनुष से फेंके हुए अमोघ बाण विरोधियों के कवच में छेद कर रहे थे।

पण्डित ताराचरण ने पूछा- आप मनुस्मृति को वेदमूलक कैसे मानते हैं? महर्षि जी ने उत्तर दिया-सामवेद के ब्राह्मण

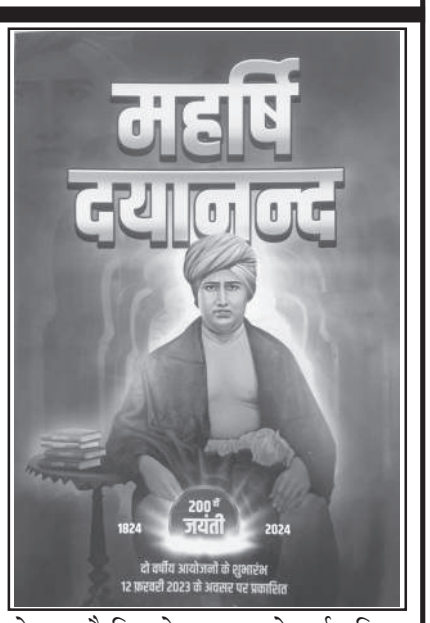

ने कहा है कि जो कुछ मनु ने वर्णन किया है वह औषधों का भी औषध है।'

ताराचरण जी चुप हो गए; स्वामी विशुद्धानन्द जी मदद के लिए पहुंचे। आप बोले- **रचनानुपपत्तेश्च नानुमानम्** इस वेदान्त-सूत्र को वेदमूलक सिद्ध करो।'

महर्षि जी ने उत्तर दिया- यह उपस्थित वाद के भीतर नहीं है।'

- क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुन:प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Continue From Last Issue

Rishi Dayananda Saraswati's Influence Outside of India

- Ashwini K. Rajpal, Vancouver, Canada
Email : iffvs1@gmail.com

The *Arya Paropkarini Sabha* was successful in obtaining colonial government permission for cremation, *Antyesti Sanskaar*. On February 21 & 22, 1925 a large enthusiastic crowd consisting of both *Arya Samajists* and the *Puranikas* assembled at the *Dayanand Dharmashala* to celebrate *Rishi Dayananda's* birth centenary. In 1933 the 50th death anniversary of the *Rishi* was commemorated with glowing tributes. This same year the first Aryan Women's Conference was held and attended by some five hundred women. As a result, many *Kanya Paathashaalaas* were opened. The Legislative Council passed a constitutional reform whereby anyone who could sign his name in any language would have the right to vote. The Hindu population got its benefits due to the work done by *Arya Samaj* in propagating Hindi. The total number of voters on the roll increased from 11,844 in 1946 to 71,569 in 1948. Consequently, results of General Elections were in favour of Hindus.

Arya Sabha Mauritius hosted the 12th International Aryan Conference on August 22-26, 1973. Two years later, on April 10-12, 1975 the centenary celebrations of the foundation of the *Arya Samaj* in India were held in Mauritius. The activities of the *Sabha* are effectively handled by several sub-committees.

An International Conference was held on September 27-29, 1998 to mark the centenary of the introduction of *Satyaarth Prakaash* in Mauritius. A three day International Aryan Conference was organised on December 5-7, 2003 to mark the centenary celebrations of establishment of the first *Arya Samaj* unit in Mauritius. In September 2008 a four-day International *Arya Maha Sammelan* was held in Morcellement St. Andre, Mauritius. The centenary celebrations of the arrival of *Dr Chiranjiva Bhardwaja* was held in December 2011 with a series of activities. An International Conference to mark the registration of the *Arya Paropkarini Sabha* was held from December 5-8, 2013.

Arya Sabha Mauritius has around 400 branches (*Shakha Samajs*) including *Mahila Samaj* and *Arya Yuwak Sangh*. It runs 175 evening Hindi schools.

Vedic festivals are organized with great pomp. It has 2 primary schools and 3 secondary colleges. The *Rishi Dayanand Institute* trains *Purohits* and *Purohitas*. The *Sabha* runs 6 ashrams, 1 shelter for children and 1 rehabilitation centre for alcohol/drug addicts.

Guyana (formerly British Guiana). First *girmit* arrivals May 5, 1838. Two ships, Hesperus and Whitby, brought the first batch of *girmitiyas* to Guyana. This was arranged by plantation owner, John Gladstone, who was Father of William Gladstone, later Prime Minister of U.K. On October 3, 1901 *Pandit Lachman Singh Prasad* arrived as a *Girmitiya* at age 27. His Emigration Pass showed he was from *District Kangra* in *Himachal Pradesh*, formerly part of Punjab. According to his biography he had attended university in Lahore, which was part of undivided India. Prior, he had served as a *girmitiya* and a Vedic Missionary to South Africa and was attached to the *Ghadar* party in San Francisco. He was influenced a lot by *Arya Samaj* and was involved in spreading the teachings of the *Veda*. When *Bhai Parmanand* visited Guyana in 1910 it was written that Guyana was the centre of the *Arya Samaj* movement in the Caribbean. However, *Bhai Parmanand*'s speeches increased membership in *Arya Samaj* a great deal. On January 5, 1949 *Pandit Ji* departed Guyana to spend the rest of his life in India.

Unfortunately, his soul left his mortal body before arrival in India. Other *Arya Samaj* missionaries arrived and they included *Mehta Jaimini* in 1928, *Pandit Ayodhya Prasad* in 1934, *Professor Bhaskaranand* in 1936 and stayed until 1945 and *Pandit Usharbudh Arya (Swami Veda Bharati)* in 1956. Initially *Arya Samaj* was involved in denouncing the system of caste by birth and child marriage. Later it worked for the freedom of worship, human equality, upliftment and emancipation of women, Hindi education and *Veda* for all. It was successful in *shuddhi*. Radio broadcasts and Arya Youth Training Camps became popular. Unfortunately, many *Arya Samajists* have now immigrated to other countries and activities have greatly diminished.

To be Continue.....

पृष्ठ 3 का शेष

बहुत से लोग इसमें प्रश्न करते हैं, बड़े परिवार से जनसंख्या बढ़ेगी, तब लोग कहाँ जायेंगे? इसका उत्तर अभी भले ही हम नहीं समझें किन्तु चाइना तथा अरब के देश समझ गये। क्योंकि आज देखा जाये तो रूस की जनसंख्या में भारी गिरावट दर्ज की जा रही है, जापान में जनसंख्या बड़ी तेजों से नीच आ रही है। अमेरिका और यूरोप के देश में लोग एक बच्चा एक कुत्ता पालने की नीति पर आ चुके हैं। मसलन जिस यूरोप ने कभी जनसंख्या के बल पर दुनिया की संस्कृति, धर्म, इतिहास एवं भूगोल बदले आज उसी यूरोप की धर्म संस्कृति को कोई अन्य समुदाय अपने जनसंख्या बल पर बदल रहा है। शायद चाइना ने यही सोचकर अपनी हाल ही में जारी जनसंख्या नीति में बदलाव किये। इसके पीछे की सोच यही हो सकती है कि कल कोई चीन की संस्कृति पर कब्जा करें इससे पहले वो खुद ही दूसरों की संस्कृति सभ्यता पर कब्जा करना आरम्भ कर दें।

भारत में भले ही बढ़ती जनसंख्या को लेकर एक आक्रोश फैल रहा हो। किन्तु सितम्बर 2022 में देश के विदेशमंत्री एस. जयशंकर ने अपने एक कार्यक्रम में बोलते हुए कहा था कि भारत की जनसंख्या वृद्धि दर बड़ी तेजी से नीचे गिर रही है। यह सच भी है क्योंकि हमारे आस-पास के सिकुड़ते परिवार इसकी गवाही भी दे रहे हैं। एक समय था कभी घर और मन इतने विशाल थे कि चाचा, ताऊ ही नहीं, बल्कि दूर के रिश्ते के भाई , बंधु और उनके परिवार भी इसमें समा जाते थे।

किन्तु आज इस सबके बावजूद आज भारत में लोगों को यही सिखाया जा रहा है कि बच्चे पैदा मत करो, शादी मत करो, शादी करो तो बच्चे नहीं, बल्कि जानवरों का पालन-पोषण करो। जबकि मानव देश की ऊर्जा है, जब यह ऊर्जा ही नहीं होगी तो देश का संचालन कौन करेगा? देश के सैन्यबलों से राज्य सुरक्षा बलों तक कौन लोग देखरेख करेंगे? किसका षड्यंत्र है ये, जो इस तरह केवल एक समुदाय को दिशाहीन कर रहा है? क्योंकि हम लोग उन भारतीय परम्पराओं तथा रिश्तों से जुड़े लोग थे जब एक समय वृद्धाश्रम जैसी संस्थाएं हमारी परिकल्पनाओं से परे थीं, लेकिन आज शहर-दर-शहर खुलते जा रहे हैं। और ये बुजुर्ग स्वेच्छा या मजबूरियों में वहाँ पहुंचाए जा रहे हैं। लिव-इन-रिलेशनशिप और अन्य अनैतिक सम्बन्धों के चलते पति- पत्नी का नैतिक सामाजिक रिश्ता समाप्ति की कगार पर जा रहा है।

माना आजकल महंगाई बढ़ती जा रही है, ऐसे में डिलिवरी, दवाई के खर्चे और पढ़ाई-लिखाई के खर्च लोगों कुछ हद तक भारी पड़ सकते हैं किन्तु जो आर्थिक रूप से संपन्न हैं इन जिम्मेदारियों को बखूबी निभा सकते हैं। वह भी इसी बहाव में फंसकर रह गये और एक ही बच्चे की परम्परा में सम्मलित हो रहे हैं। जबकि दूसरा बच्चा आ जाने से पहला बच्चा खुद को अकेला नहीं समझता है। उसको वास्तव में जीवन भर का एक सच्चा और हितैषी साथी मिलता है।

पहले बच्चे को एक साथी मिल जाता है जिसके साथ वो घर में खेलकुद सकता है। उसे दूसरे किसी अन्य दोस्त की कमी महसूस नहीं होती। बच्चा भी अपना साथी चाहता है वो अपने बालपन की बातें चाहकर भी भाता-पिता से नहीं कर सकता। जब एक ही आयु के दो बच्चों को बात करता देखें तो आप स्वयं महसूस करेंगे कितनी खुशी उनको प्राप्त है। साथ ही दूसरा बच्चा आ जाने से आपको अपने लिए थोड़ा समय मिल जाता है, क्योंकि वे दोनों एक दूसरे में व्यस्त रहते हैं। उन्हें रिश्ते मिल जाते हैं जो आगे चलकर एक बेहतर परिवार का निर्माण करते हैं। उस स्थिति में माता-पिता के पास बुढ़ापे में विकल्प भी होते हैं, भले ही एक पल उनकी जेब में पैसा न हो पर सामाजिक रूप से तो रिश्तों नातों से झोली भरी रहती है। किन्तु दुर्भाग्य एक ही बच्चे नीति से आज वो झोली खाली दिखाई दे रही है।

आज ये भले ही भविष्य का संकट दीखता हो, किन्तु अभी समय है, अभी इस संकट से पार पाना हमारे हाथ में है। वरना, पहले यह ओल्ड एज होम होगा, फिर ओल्ड एज सोसाइटी होगी, और बढ़ते-बढ़ते हमारे स्मार्ट सिटी ओल्ड एज सिटी में बदल जायेंगे फिर होगा ओल्ड एज स्टेट और अंत में ओल्ड एज कंट्री न बन जाये।

पुन: गंभीरता से सोचें-दो बच्चों की चली परम्परा से चाचा, मौसी, फूफा, ताऊ, ताई आदि रिश्ते समाप्त हो गये। एक बच्चे की परम्परा से भाई और बहन जैसे अहम रिश्ते भी समाप्त हो गये।

इसके अलावा लिव-इन रिलेशनशिप की बढ़ती आधुनिक परम्परा ने पति-पत्नी जैसे पवित्र रिश्ते को तार-तार करके रख दिया। 'नो चाइल्ड पालिसी' जैसे स्लोगन और षड़्यन्त्र पिता-पुत्र और माँ-बेटी जैसे सबसे अहम रिश्ते भी समाप्त कर देने की तैयारी में हैं। ध्यान रहे !

क्या आपको लगता है कि ऐसे भविष्य का भारत मजबूत हो सकेगा? परिवार राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई है, अगर सबसे छोटी इकाई ही कमजोर होगी या समाप्त हो जाएगी तो भविष्य के भयावह भारत की कल्पना हमें ही जरूर, जरूर करनी होगी। इसलिए, आइये रिश्ते बचाइए-देश बचाइए।

पृष्ठ 2 का शेष

ऑनलाइन डाकू लूट रहे हैं लोगों के मेहनत की कमाई

पैसे निकल जाते हैं।

अगर आपने कोई बुकिंग नहीं की है और कोई इस तरह कॉल कर सामान बुक करने की बात कहे तो साफ मना कर दें, समय रहते उस कंपनी को और पुलिस में भी शिकायत दे सकते हैं। केवल इतना भर नहीं ठगी का एक और नया धंधा है इसमें जालसाज अपने टारगेट को कई बार मिसकॉल करते हैं। इसके बाद अचानक उस शख्स के फोन से मोबाइल सिग्नल चला जाता है। इसी दौरान ठग रुपये उड़ाते हैं। ऐसे ही कुछ केस की जांच के बाद अलग-अलग स्टेट की पुलिस को पता चला कि इस तरह की ठगी सिम स्वैपिंग की जरिये हो रही है। इसमें मिस कॉल करने के बाद ठग आपके नंबर का डुप्लिकेट सिम निकलवा लेते हैं और उस सिम को अपने फोन में लगाते हैं। डुप्लिटकेट सिम निकलते ही आपका सिम बंद हो जाता है। इसके बाद आपके सारे ओटीपी का एक्सेस ठगों के पास होता है और वह आपको चपत लगाता है। अब इससे कैसे बचे इसका तरीका यही है कि कभी भी एक नंबर से बार-बार मिसकॉल आए तो तुरंत उस नंबर को ब्लॉक कर दें। फोन पर कोई संचालन कंपनी का कर्मचारी बनकर ओटीपी या अन्य डिटेल मांगे तो डिटेल न दें।

इसके अलावा व्हाट्सऐप सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया जाने वाला सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है। ऐसे में साइबर ठग भी फ्रॉड के लिए इसका इस्तेमाल करने लगे हैं। इसमें जालसाज किसी व्यक्ति को अलग-अलग तरीकों से संपर्क करते हैं, उन्हें किसी क्लास में शामिल होने, या कमाई का झांसा देकर एक लिंक पर क्लिक करने को कहते हैं, लिंक पर क्लिक करते ही एक ओटीपी आता है, जिसे वे मांग लेते हैं। इस ओटीपी को डालते ही ठगों के पास सामने वाले के व्हाट्सऐप का एक्सेस चला जाता है। यानी आपके फोन से व्हाट्सऐप लॉगआउट होकर उसके फोन में लॉगिन हो जाता है। इसके बाद ठग आपके व्हाट्सऐप से आपके दोस्तों और रिश्तेदारों को मैसेज कर मदद मांगते हैं। क्योंकि मैसेज आपके नंबर से गया होता है इसलिए लोग इस पर भरोसा करके पैसे दे देते हैं। इसमें सबसे पहले तो कोई भी व्हाट्सऐप कॉल करके ओटीपी मांगे तो उसे ये न बताएं। दूसरा अपने व्हाट्सऐप पर टू फैक्टर ऑथेंटिकेशन या टू स्टेप वेरिफिकेशन लगाएं। इस प्रोसेस में आपको एक पिन डालना होगा। ऐसा करने पर आप जब कभी किसी दूसरे फोन पर व्हाट्सऐप लॉगिन करेंगे तो यह पिन डालने पर ही आपका अकाउंट लॉगिन होगा।

यानि ठगी किसी भी तरह की जा सकती है और इससे बचने का एक तरीका है वो है ना डरें, ना लालच में आयें। कभी कोई अनजान व्यक्ति डराए तो अपने परिवार, दोस्तों से सम्पर्क जरुर करें। पुलिस की सहायता ली जा सकती है। इसके अलावा किसी भी लालच में आने से पहले एक बार जरूर सोचें कि कोई अनजान व्यक्ति जिसका आपने चेहरा भी नहीं देखा वो आपको फ्री में कुछ भी क्यों दे रहा है? - ***सम्पादक***

पृष्ठ 5 का शेष

महान देश भक्त भाई बाल मुकुन्द : जिसने एक ही बम ...

की पूरी कम्पनी को भी तैनात किया गया था।

देश की आजादी के मतवालों को यह सब नागवार गुजर रहा था वो महर्षि दयानंद के कथन से सहमत थे कि कोई कितना भी प्यार दुलार करले, किन्तु देश का राजा इसी भारत माता की कोख से जन्मा होना चाहिए। आजादी के मतवाले जार्ज पंचम को जवाब देने के लिए एक-एक कर दिल्ली में जुट चुके थे। योजना थी शोभायात्रा में वायसराय लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंक कर निपटाने की।

भाई बालमुकुंद, बसंत कुमार विश्वास, अवध बिहारी, मास्टर अमीर चंद, रास बिहारी बोस, पूरा जमावड़ा दिल्ली में था। लार्ड हार्डिंग की सवारी चांदनी चौक धूलिया वाले कटरा के पास से गुजर रही थी कि इसी दौरान दो बम फटे बम महिलाओं की भीड़ से फेंके गये। बम फेंकने वाले दोनों बुर्के में थे। जरा सी चुक हुई और वायसराय लॉर्ड हार्डिंग मरते-मरते बचा। किन्तु घायल हो गया था। इस बमकाण्ड में बसंत कुमार विश्वास के अलावा भाई बालमुकुंद मौजूद थे जो भीड़ से बम फेंककर निकल गये थे।

बालमुकुंद को इस बात का बड़ा दु:ख रहा कि वाइसराय बच गया। इसलिए उन्होंने अपनी पत्नी को भाई परमानंद के घरवालों के पास छोड़ा और स्वयं जोधपुर के राजकुमारों के ट्यूटर बन गये। अगली योजना यह थी कि लॉर्ड हार्डिंग यहाँ कभी ना कभी आयेगा और वह नजदीक से उन पर बम फेंक कर अधूरा काम पूरा करेंगे। पुलिस को बहुत दिनों तक पता नहीं चल पाया कि चाँदनी चौक के बमकांड के पीछे कौन था। लेकिन, आखिर में 16 फ़रवरी, 1914 को वह गिरफ्तार कर लिये गये। सभी पर आरोप था कि इन्होंने 1912 में चांदनी चौक में लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंका था। हालांकि इनके खिलाफ जुर्म साबित नहीं हुआ, लेकिन अंग्रेज हुकूमत ने शक के आधार पर इन्हें फांसी की सजा सुना दी। 8 मई, 1915 को मास्ट अमीरचंद, भाई बालमुकुंद और मास्टर अवध बिहारी को फ़ाँसी पर लटका दिया गया, इसके अगले दिन 9 मई को अंबाला में बसंत कुमार विश्वास को भी फांसी दी गई। फांसी की इस अप्रत्याशित घटना ने देशवासियों का खून खौला दिया था और लोगों में अंग्रेजों के प्रति नफरत और बढ़ा दी।

किन्तु इस किस्से में एक दर्द अभी बाकी है भाई बाल मुकुंद की पत्नी रामरखी की इच्छा थी कि उनके पति का शव उन्हें सौंप दिया जाए, लेकिन अंग्रेज हुकूमत ने उन्हें शव नहीं दिया। उसी दिन से रामरखी ने भोजन व पानी त्याग दिया और अठारहवें दिन उनकी भी मृत्यु हो गई। भाई बालमुकुंद दिल्ली षड़यंत्र में फ़ाँसी पाने वाले प्रमुख क्रांतिकारियों में से एक थे। आर्य समाज की भट्टी से तपकर निकले निराले योद्धा थे। भाई बालमुकुंद, मास्टर अमीरचंद, और मास्टर अवध बिहारी जी पुण्यतिथि पर आर्य समाज का शत-शत नमन। - ***राजीव चौधरी***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 6 मई, 2024 से रविवार 12 मई, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 9-10-11/05/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 8 मई, 2024

ओ३म्

(सार्वदेशिक आर्य वीर दल की प्रान्तीय इकाई)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश (पंजी०)

(सान्निध्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में)

चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण शिविर

स्थान: एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली 110026

दिनांक: बुद्धवार 22 मई से शनिवार 1 जून 2024 तक

उद्घाटन: 26 मई, रविवार सायं 5 बजे

समापन: 1 जून, शनिवार सायं 4:00 बजे

मान्यवर महोदय नमस्ते

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में आयोजित एवं आर्य समाज की स्थापना के वर्ष 2025 में 150 वर्ष पूर्ण होने के महा-पावन उपलक्ष पर, दल ने 200 शाखाओ के संचालन का संकल्प लिया है इस हेतु इस वर्ष विशेष शिविर का आयोजन किया जा रहा है

ओ३म्

आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश

(आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश की महिला प्रांतीय इकाई)

के तत्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक: 2 जून, 2024 रविवार से 9 जून, 2024 रविवार तक

स्थान: डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर 7 रोहिणी, दिल्ली

माननीय महोदय,

क्या आप चाहते हैं कि आपके परिवार की बेटियां निर्भीक-निडर होकर इस समाज में रहें। क्या आपकी बेटी समाज व राष्ट्र के प्रति जागरूक हों, और वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत हों, यदि हाँ?.....तो इनको आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश के शिविर में अवश्य भेजें। इस शिविर में इनको आत्मरक्षा गुणों के साथ व्यक्तित्व विकास, योग्य शिक्षिकाओं द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

उद्घाटन समारोह
सोमवार 3 जून, 2024
(सायं 5:00 बजे)

!! कार्यक्रम !!

भव्य समापन समारोह
रविवार 9 जून, 2024
(सायं 4:00 बजे)

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण
(अजिल्द) 23x36%16
मुद्रित मूल्य ₹60 प्रचारार्थ मूल्य ₹40

विशेष संस्करण
(सजिल्द) 23x36%16
मुद्रित मूल्य ₹100 प्रचारार्थ मूल्य ₹60

पॉकेट संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50

विशिष्ट पॉकेट संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹100

स्थूलाक्षर
(सजिल्द) 20x30%8
मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120

उपहार संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750

सत्यार्थ प्रकाश
अंग्रेजी अजिल्द
250
160

सत्यार्थ प्रकाश
अंग्रेजी सजिल्द
300
200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

आर्य समाजों की विभिन्न गतिविधियों से सम्बन्धित रजिस्टर उपलब्ध हैं

- आर्य समाज सदस्यता रजिस्टर
- आर्य समाज सदस्यता शुल्क (चन्दा) रजिस्टर
- भवन आरक्षण रजिस्टर
- आर्य वीर दल रजिस्टर
- आर्य वीरांगना दल रजिस्टर
- संस्कार (पुरोहित रजिस्टर)
- आर्य युवा महिला मिलन सदस्यता रजिस्टर
- आर्य बाल वाटिका रजिस्टर
- आर्य कुमार सभा रजिस्टर
- रसीद बुक रजिस्टर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्

वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प

इच्छुक युवा अपना विस्तृत आवेदन पत्र निम्न अनुसार भेजें

दिल्ली एवं देश-विदेश में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार हेतु प्रचारकों की आवश्यकता

वांछित योग्यताएँ

- युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो
- आर्य समाज के प्रचार प्रसार की हार्दिक इच्छा रखता हो
- यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में सक्षम हो
- गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो
- आर्य वीर दल से प्रशिक्षित युवाओं को वरीयता दी जाएगी

चयनित अभ्यर्थी को भाषा, ज्ञान, अनुभव व निपुणता के आधार पर उपयुक्त स्थानों पर नियुक्ति की जाएगी। सम्मानित मानदेय के अतिरिक्त वाहन व्यय, मोबाइल व्यय, व आवश्यकता होने पर आवास की सुविधा दी जाएगी।

आवेदन भेजने की अंतिम तिथि 30 मई 2024

लिखित, मौखिक परीक्षा एवं साक्षात्कार 5-6 जुलाई 2024

1 अगस्त से 30 सितम्बर तक आवासीय प्रशिक्षण

अपना स्वविवरण निम्न पते पर भेजें
(नाम, पता, फोन नं, अध्ययन, योग्यता, अनुभव)

डाक : संयोजक, वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
संपर्क सूत्र: 9650183335, 9990232164
E-mail: aryasabha@yahoo.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह